मोहयाल मित्र

स्मरणीय टूर-कोपा विद्यार्थी (मैरिट)

''कहते हैं जब धूप बहुत तेज हो, गर्मी में सूरज आपको बुरी तरह तपा देता है और अचानक उम्मीद की राहत की रोशनी लिए बादलों का झुंड सूरज की तपश को अपनी ठंडक से ढक ले, धरती पर रहने वाले हर प्राणी को अपनी बारिश की बूंदों से भीगो दे तो लगता है तन, मन इन बूंदों के पड़ने से तृप्त हो गया है। बारिश की इन बूंदों को देखकर नाचने पर मजबूर हो जाता है जंगल का मोर। ऐसा लगता अपने पंखों को फैलाकर वह इन बूंदों का स्वागत कर रहा है और इन बूंदों को अपने अंदर समा लेना चाहता है।''

कुछ इसी तरह से है हमारे मोहयाल बच्चे जो स्वंय किसी मोर से कम नहीं समझते। जिन्होंने अपने परीक्षा के दिनों को सफलता पूर्वक पार कर लिया और उन्हें पुरस्कार रूप में अपनी शिक्षा संस्था द्वारा एक अनुपम भेंट प्राप्त हुई जो थी एक छोटी सी हमेशा स्मरणीय रहने वाली यात्रा जो शुरू तो हुई 31.03.2015 को प्रातः आठ बजे दिल्ली से और जा पहुँचे हरिद्वार, मंसूरी और ऋषिकेश। हमारे साथ हमारी संस्था के अध्यापक, अध्यापिकाएं व सहायक गण भी बच्चे बन गए। सभी सदस्य जिसमें आदरणीय रंगनाथन सर, डॉ. दत्ता सर, मीना मैम, तुषार सर, रहीम सर, नेहा मैम, कंचन मैम, मीनू मैम, ने हमारा मार्गदर्शन ही नहीं किया बल्कि हमारे साथ भरपूर मस्ती की।

हम सब शाम 5 बजे गाते हुए मस्ती करते हुए हरिद्वार पहुँच कर हम सबने मोहयाल आश्रम पर अपना डेरा लगाया। मोहयाल आश्रम सभी के सहयोग से बनायी गई एक अनुपम जगह है जहाँ हमें हर प्रकार की सुविधा प्राप्त हुई। आसपास की हरियाली अंदर बने मंदिर ने मन को मोह लिया।

खाना खा लेने के बाद हमने हरिद्वार की शाम हर–की–पौडी की आरती का आनंद लिया। शाम की आरती के बाद हम सभी ने गंगा माँ के अमृत समान बहती जल धारा में स्नान किया और लगा जैसे रास्ते भर की थकान पल भर में उतर गई। वापिस लौटने पर हमने मोहयाल आश्रम के मंदिर के दर्शन किए जहाँ मोहयाल सप्तऋषियों की मूर्तियां थी।

अगली सुबह हम सभी मसूरी जाने के लिए तैयार हो गए और भोजनालय में नाश्ता करने के बाद सभी मस्ती की शुरूआत करते हुए मसूरी चल पड़े। मसूरी जाने का रास्ता अत्यंत मनमोह था। हल्की–हल्की ठंड बहुत अच्छी लग रही थी। मसूरी तक जाने वाले रास्ता जितना खतरनाक था उतना ही सुंदर था। मसूरी में हमने ''केमटी फॉल'' देखा जो पहाड़ों से निकलता हुआ झरना था। ऐसा लगता था जैसे पहाड़ों को चीरकर सफेद मोती गिर रहे हैं। कुछ बच्चों ने वहाँ स्नान किया और झरनें के बीच खड़े होकर सभी ने ग्रुप तस्वीर खींचवाई शाम पाँच बजे झूमते हुए वापस मोहयाल आश्रम हरिद्वार आए। पता ही नहीं चला कि हमारा दिन कब शुरू हुआ और रात की चादर में लेपटे हुए हम सो गए।

अगला दिन नयी मस्ती के साथ निकला, जिसमें हम सभी एक नयी जगह पर जाने के लिए बिल्कुल तैयार थे और वह थी ''ऋषिकेश''। हरिद्वार से आधे पौने घंटे का सफर काट कर हम ऋषिकेश पहुँच गए। जहाँ पहुँचकर सबने तय किया कि मिलकर ''रिवर राफटिंग'' करेंगे। हमारे अध्यापक गणों ने दो बोट उपलब्ध करवायी और हमने ''रिवर राफटिंग'' का आनंद उठाया। पानी में जाते ही ऐसा लगा लहरें भी हमारी मस्ती में घुल मिल जाना चाहती है हम भी लहरों का पूरा सहयोग दे रहे थे। ''रिवर राफटिंग'' करने के बाद हम सभी ने मोहयाल आश्रम की ओर प्रस्थान किया। शाम को खाना खाने के बाद दिल्ली की ओर रूख किया। ये सुनहरे पल बीते दिनों की हमेशा याद दिलाएगें। स्मरणीय यात्रा के लिए हम सब विद्यार्थी अपने शिक्षक गणों, व मोहयाल आश्रम के सहायक गणों, को धन्यवाद करते हैं।

''मुझे गर्व है इस इंस्टीट्यूट में पढ़ने का, जिसने मोहयाल बेटी की खुशियाँ झोली से भर दिए।''

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेरी साथियों की मन की बातें:

"हरिद्वार आश्रम के रास्ते में हम लोगों ने खूब मजा किया, गाने बजाकर, अन्ताक्षरि खेलकर और इन सब के लिए डॉ. दत्ता और एस. रंगनाथन सर ने मना नहीं किया बल्कि उन्हें भी आनंद आ रहा था। इसके लिए धन्यवाद उनको।"

कर जाओ कुछ काम, ऐसा अपने जीवन में।
हो सर ऊँचा अपना, दूसरे के दिलों में।।

-सूरज शुक्ला

"में और मेरी तन्हाई जब ट्रिप पर गए तो मेरी तन्हाई थोड़ी दूर हुई। It is a great experience कुछ बच्चों को डर भी लग रहा था, लेकिन सबने अपने तरीके से मजे किए। रिवर राफटिंग में सबसे ज्यादा मजा आया।" ***-सचिन देव***

"आने जाने का सफर पूरा गानों से और मस्ती वाला था। मैंने, हिमांशु और राजेश ने खूब डांस किया। तीन दिन हँसते–गाते निकल गए। सब टीचर्स और स्टाफ ने पूरा सहयोग दिया, मैं उनका आभारी हूँ।" ***-सुमित कुमार***

"वो तीन दिन मेरी जिंदगी के सबसे अच्छे दिन थे। मैं अपने दोस्तों और टीचर्स के साथ फिर से जाना चाहता हूँ।"

-हिमांशु सेजवाल

"हरिद्वार की शाम मुझे बार–बार याद आती है पवित्र गंगा में स्नान करना और उसमें बहते दीयों की रोशनी साथ में आरती की गूँज गंगा माँ की आरती।" ***-मनीषा***

"मेरे पिताजी ने जाने की आज्ञा नहीं दी। मुझे इस बात का खेद रहेगा। सब दोस्तों की बातें सुनता हूँ लगता है मैंने सुनहरे पल खो दिए हैं।" ***-शिव कुमार सोनी***

"जिन्दगी में पहली बार डायरेक्टर सर, टीचर्स के साथ जाने का अनुभव सबसे अच्छा लगा। इस तरह का टूर हर इंस्टीट्यूट को करना चाहिए। मेरे लिए यह यादगार टूर रहा।" ***-रवि कान्त***

"पहाड़ों का नजारा और टेडा मेढा रास्ता साथ में ठंडी हवाओं ने मन को लुभा लिया। सबसे यादगार टूर रहा।"

-राजेश रमन

"जिन्दगी में कभी सोचा नहीं था "रिवर राफटिंग" के बारे में। लेकिन मेरिट इंस्टीट्यूट ने हमें मौका दिया। मैं दिलों से सबका धन्यवाद करना चाहता हूँ"। ***-नीरज वैद***

"मैं कभी भी पहाड़ों पर घूमने नहीं गई। मेरी जिन्दगी का सबसे हसीन पल थे– यह तीन दिनों की यादें हमेशा याद रखूंगी और कभी भूल नहीं पाऊंगी।" ***-आरती टोकस***

प्रिया बाली *(कोपा विद्यार्थी), महरौली, नई दिल्ली*

जन्म-दिन की बधाई

ट्रिन–ट्रिन! हैलो अंकल, मैं दीपक मेहता (रीशू) कुरूक्षेत्र से बोल रहा हूँ। आपके आशीर्वाद से मैंने अपने दादाजी (पवन मेहता) व दादी माँ (श्रीमती पूनम मेहता), नाना–नानी तथा सभी रिश्तेदारों के साथ 21 मार्च को अपना दसवां जन्मदिन मनाया। मेरी मम्मी श्रीमती पिंकी व चाचा और बुआ आदि ने केक काटने में मेरी मदद की। मेरी छोटी बहन गुड्डू ने मुझे मोमबत्ती को फू... . करने में मेरी मदद की। पेरिस से मेरे पापा ने मुझे बहुत सारी गिफ्ट देने का वादा किया। 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अब मैं छठीं कक्षा में आ गया हूँ, इसी खुशी के मौके पर मेरी दादी पूनम मेहता (छिब्बर) ने जीएमएस को 100 रुपए भेंट किए।

मो. 9996861265

शादी की रस्में

-पूरनचंद बाली 'नमन'-

हम को आपस में मिलवाती
एक दूसरे से
कितनी सुंदर हैं यह रस्में
शादी की परिवारों में।

कोई पहली बार मिला है
कोई दशकों बाद
चिन्ह समय के अंकित हैं
चेहरों पर सबके।

भीड़ में खोये मुझ को जिसने
ढूंढ निकाला था बचपन में
याद बहुत करता रहता हूँ
उसको मैं भी मन ही मन में।

दूर–दूर से आए घरों से
निकल के लोगों की
पूरी होती इसमें कोई
साध ही जीवन की।

एक तरफ है जोश युवाओं
के चेहरों पर कितना
उनके देख रहे वृद्धों की
आँखों में है विस्मय जितना।

समय की दो छोरों को जैसे
आपस में मिलवाती हैं
कितनी सुंदर है यह अपनी
शादी की रस्में.....

आवभगत में लगे हुए
इन लोगों को देखो
प्रेम भाव में डूबे इन
आकँठ मनों को देखा।

फोनः 42954385

मई में व्रत, त्योहार

1. तीन मई–कूर्मावतार, व्रत की पूर्णिमा 2. बुद्ध पूर्णिमा (चार मई), 3. गणेश चौदस संकटी (सप्तम मई), 4. शीतला अष्टमी व्रत (ग्यारह मई), 5. अचला एकादशी (चौदह मई), 6. शनिश्चर जयंती (सत्रह मई), 7. अमावस्या सोमवती (अठारह मई), 8. महाराणा प्रताप जयंती (बीस मई), 9. विनायक गणेश चतुर्थी व्रत (इक्कीस मई), 10. गंगा दशहरा (अठाइस मई), 11. निर्जला एकादशी (29 मई)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

जगाधरी वर्कशाप

मोहयाल सभा जगाधरी वर्कशाप का स्थापना दिवस 12 अप्रैल 2015 जंज घर मॉड्रन कालोनी आई.टी.आई में सभा के प्रधान श्री सतपाल दत्ता जी की अध्यक्षता में धूम–धाम से मनाया गया, जिसमें बहुत तादाद में मोहयाल परिवारों ने भाग लिया।

समस्त मोहयाल समाज की सुख–शांति एवं समृद्धि के लिए हवन का आयोजन किया गया, हवन के उपरान्त भाई मतिदास जी छिब्बर जी के चित्र पर माल्यार्पण की गई, इस अवसर पर सभा के प्रधान जी ने अपने विचार रखे तथा आए सभी भाई–बहनो का धन्यवाद किया। इस अवसर पर श्रीमती मधु मेहता छिब्बर, श्रीमती रीटा मेहता वैद ने अपने–अपने विचार रखे तथा सभा में महिलाओं की काफी संख्या देख कर सुझाव दिया कि जगाधरी वर्कशाप अपना स्त्री विंग बनाए। कुमारी रिचा छिब्बर का सुझाव था कि सभी सदस्य अपने परिवार सहित मोहयाल सभा में आया करें ताकि बच्चे आपस में मिलकर अपनी पढ़ाई एवं केरियर के बारे में विचार कर सके।

हवन के समापन पर जलपान का आयोजन किया गया एवं लड्डू बाँटे गए। इसके बाद सभा की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। सभा के सदस्यों ने अपने–अपने विचार रखे सदस्यों ने सभा की सदस्याता बढ़ाने के लिए सुझाव दिए।

मोहयाल सभा लुधियाना द्वारा मोहयाल मेला आयोजित किया गया, इस अवसर पर किए गए शानदार कार्य एवं काम को सराहा तथा सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

शोक समाचारः सभा ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं– 1. श्रीमती निर्मल कान्ता दत्ता 2. श्री आनन्द मेहता 3. श्रीमती सुमन वैद 4. श्री सूरज प्रकाश बाली, पावंटा साहिब एवं श्री दीपक मेहता जी की शांति के लिए प्रार्थना की उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए एवं भगवान से प्रार्थना करती है कि परिवारों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

सभा की मई माह की बैठक दिनांक 03.05.2015 को जंज घर मार्डन कालोनी, यमुनानगर में होगी। सभा का समापन गायत्री मंत्र से हुआ।

एस.पी. बाली, *सचिव* — *मो.: 09729530102*

सुरेन्द्र मेहता छिब्बर, *महासचिव* — *मो. 9896102843*

फरीदाबाद

फरीदाबाद मोहयाल सभा की मासिक बैठक 5 अप्रैल 2015 को मोहयाल भवन फरीदाबाद में श्री नगेन्द्र दत्ता (वाइस प्रेसीडेंट) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 30 भाई–बहनों ने भाग लिया। अध्यक्ष श्री रमेश दत्ता, शहर से बाहर होने के कारण, मासिक बैठक में उपस्थित नहीं हो सके।

मोहयाल प्रार्थना के उपरान्त रायज़ादा के.एस. बाली, महासचिव ने पिछले मास की रिपोर्ट सभा के समक्ष प्रस्तुत की। रायज़ादा के.एस बाली जी व श्री नगेन्द्र दत्ता जी ने बिरादरी में एकता व भाईचारे पर जोर दिया व युवाओं को भी मासिक बैठकों में अधिक संख्या में उपस्थित होने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि जीएमएस व लोकल सभाएँ ऐसे कई कार्यक्रम करती रहती है, जिससे युवा वर्ग की भागीदारी बिरादरी के कार्यों में बढ़े। श्री विनय बक्शी ने कहा कि बच्चों का एक दूसरे से मिलना व मेल–जोल बढ़ाना अति आवश्यक है।

श्री बलराम दत्ता जी ने सभी को सूचित किया कि मोहयाल आश्रम हरिद्वार में अब कमरा बुक कराने के लिए ऑन लाइन सेवा उपलब्ध हो गई है, जिसका सभी ने तालियों के साथ स्वागत किया। श्री नगेन्द्र दत्ता जी ने बताया कि श्री सुरजीत मेहता जी का स्वास्थ्य आगे से बेहतर है। सभी ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। श्री राजेन्द्र मेहता जी ने प्रत्येक बार की तरह योग के विषय में बताया।

श्री मिथलेश दत्ता जी ने निम्न धन राशि एकत्र की– श्री आर. सी. दत्ता ने 500 रु., श्री जगमोहन छिब्बर 200 रुपए, श्री नगेन्द्र दत्ता जी ने अपने पोते व पोती के जन्मदिन व क्लास में प्रथम आने की खुशी में स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की थी। सभी ने बच्चों को शुभकामनाएँ दी।

अगली बैठक 3 मई 2015 मोहयाल भवन में होगी।

रायज़ादा के.एस. बाली, *महासचिव* — *मो. 9899068573*

नगेन्द्र दत्ता, *उपप्रधान* — *मो.: 9212424042*

आगरा

मोहयाल सभा आगरा की मासिक बैठक आज 05.04.2015 को कोषाध्यक्ष श्री प्रवीण दत्ता जी के निवास 97, एम.आई.जी, ताजनगरी, आगरा पर श्री कामरान दत्ता जी के नवगठित कमेटी के स्वागत उपरांत अध्यक्ष श्री वी.ए. मोहन जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 20 भाई–बहनों ने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सम्मिलित होकर नवगठित कमेटी को अपना पूरा–पूरा सहयोग देने का अश्वासन दिया तथा स्वागत किया।

सर्वप्रथम सभी भाई–बहनो ने पिछले माह गुजरे श्री जी.एल दत्ता 'जोश' व स्व. श्री ओ.पी. दत्ता (बड़े भ्राता श्री एस.पी. दत्ता सचिव, मोहयाल सभा, आगरा) के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर शोक प्रकट किया। श्री मोहनलाल शर्मा व श्रीमती प्रवीण गोयल जी ने हमारी सामाजिक गतिविधियों पर अपने विचार रखे।

सचिव महोदय ने वर्ष 2015–16 की सदस्यता हेतु सभी सदस्यों से अपील की, कि मंगल कार्यों में सभा को सहयोग देने हेतु अपना सहयोग प्रदान करें, जिससे सभा सुचारु रूप से चल सके। श्री मोहनलाल जी ने 100 रुपए, अशोक कुमार गोयल जी ने 100 रु. और श्री एस.पी. दत्ता जी ने 100 रु. अपनी नातनी पीहू दत्ता (सारा) के जन्मदिन पर व 151 रुपए अपनी शादी के सालगिरह पर मोहयाल सभा, आगरा को प्रदान किए।

सभा के अंत में शांति पाठ सभा की सभी महिला कार्यकारिणी की सदस्यों व अध्यक्ष महोदय आदि के द्वारा करने के उपरांत गायत्री मंत्र का पाठ व जय मोहयाल के नारों के साथ सभा का समापन करने से पूर्व अध्यक्ष व संयोजक महोदय ने श्री प्रवीण दत्ता जी के परिवार को, सभा में आए सभी भाई–बहनों को स्वागत सत्कार हेतु तथा उनके लड़के पुनीत दत्ता व निष्ठा दत्ता का विशेष धन्यवाद दिया।

अगली मासिक बैठक 3.05.2015 को श्री रमेश वैद जी के निवास स्थान 53/2, बल्केश्वर कॉलोनी, आगरा पर होने की घोषणा की।

एस.पी दत्ता, *सचिव (मो.) 09897455755*

नजफगढ़–नई दिल्ली

मोहयाल सभा नजफगढ़, नई दिल्ली–110043 की फरवरी 2015 मास की बैठक 05.04.2015 को कर्नल बी.के.एल छिब्बर (सेवानिवृत्त) प्रधान जी की अध्यक्षता में श्री राजेश शर्मा के कार्यालय गऊशाला रोड, नजफगढ़, नई दिल्ली में प्रार्थना एवं गायत्री मंत्र के उच्चारण से आरम्भ हुई। मार्च मास की कार्यवाही का अनुमोदन किया।

दुःखद समाचारः निम्नलिखित भाईयों के निधन पर बैठक में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई तथा शोकाकुल परिवार के प्रति दुःख प्रकट किया गया।

1. श्री जी.एल. दत्ता 'जोश', मालवीय नगर, उप–प्रधान, जीएमएस का निधन दिनांक 11.02.2015 को हो गया।

2. श्री रविन्द्र लौ, श्याम विहार, नजफगढ़ का 15.02.2015 को स्वर्गवास हो गया।

कर्नल बी.के.एल छिब्बर, प्रधान ने बैठक में सदस्यों को सूचित किया कि मेरा स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण मुझे बार–बार अस्पताल जाना पड़ता है, इसलिए फरवरी 2015 की बैठक में इनके सुझावों के अनुसार उपप्रधान श्री शेरजंग बाली को प्रधान के रूप में बैठक की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया। श्री शेरजंग बाली जी ने सभी सदस्यों से मिलकर सभा की प्रगति का विश्वास दिलाया और कर्नल छिब्बर जी से इस बैठक की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया।

अंत में सभी सदस्यों ने श्री शेरजंग बाली जी को बधाई दी और पूरे सहयोग का विश्वास दिलाया।

बैठक में सदस्यों ने आगामी 3.05.2015 की बैठक को सभा के मोहयाल परिवार मिलन–दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इसके कार्यभार के लिए प्रधान जी ने उप–प्रधान श्री रवि दत्ता, सेक्रेटरी, श्री हर्ष दत्ता एवं वित्त सचिव, श्री बलदेव राज दत्ता जी से अनुरोध किया। सदस्यों के आपसी मेल–मिलाप के पश्चात बैठक की समाप्ति की घोषणा की गई।

मई 2015 की बैठक श्री राजेश शर्मा के कार्यालय गऊशाला रोड, नजफगढ़, नई दिल्ली–43 में 3.05.2015 को होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का निवेदन है।

ले.कर्नल (रि.) बी.के.एल छिब्बर, *प्रधान*
मो. 9210869406

अमर शहीद भाई बालमुकुन्द (छिब्बर) की आठ मई की पुण्य-तिथि

अमर शहीद भाई बालमुकुन्द जी का जन्म सन् 1889 में जिला झेलम के ग्राम करियाला (अब पाकिस्तान में) हुआ था। भाई बालमुकुन्द जी ने डी.ए.वी कालेज लाहौर से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उत्तम नौकरी भी मिल गई थी। माँ बाप ने एक धर्मपरायण संस्कारवान कन्या से विवाह भी कर दिया था, अर्थात् 24 वर्ष की आयु तक पहुँचते–पहुँचते भाई बालमुकुंद जी को वह सब कुछ प्राप्त हो गया था, जिसकी कामना किसी युवा द्वारा की जाती है। किन्तु जिसने बाल्यावस्था में ही भारत की स्वतंत्रता का व्रत ले लिया हो वह व्यक्ति मोहजाल में कैसे फँस सकता था। अंग्रेजों की गुलामी और अत्याचार उन्हें स्वीकार नहीं थी। नौकरी छोड़कर क्रांतिकारी हो गए। पंजाब क्रांतिकारी दल के गठन का प्रभार भाई बालमुकंद को सौंपा गया। बमों की निर्माण तथा प्रयोग की विधि रास बिहारी बोस ने ही भाई बालमुकुंद को सिखाई थी। सीखने के पश्चात अब उन्हें इंतजार था, उस सुअवसर का जिसके माध्यम से सारी दुनिया को जता दिया जाए कि भारतीय देश भक्तों ने पराजय स्वीकार नहीं की है।

भाई बाल मुकुंद जी को वह सुअवसर भी प्राप्त हुआ। ब्रिटिश

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शासकों ने निर्णय लिया की एक भव्य जुलूस के साथ 23 दिसंबर 1912 को वाइसराय लार्ड हार्डिंग दिल्ली में प्रवेश करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भव्य जुलूस के साथ हाथी पर विराजमान वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने दिल्ली में प्रेवश किया। भीड़ अपार थी जुलूस जब चाँदनी चौक पहुँचा, उस समय भाई बालमुकुंद तथा बसंत बिस्वास बुरका पहने दर्शको की भीड़ में सम्मिलित थे। बम फेंके गए। धमाके के फलस्वरूप भारी भगदड़ मची। जुलूस अस्त–व्यस्त हो गया। लार्ड हार्डिंग को गंभीर चोटें आईं। उनका अंगरक्षक वहीं मारा गया। बम कहाँ से आए, किसने फेंके पता नहीं चल सका। अंग्रेजों की पुलिस इन खतरों से बेखबर नहीं थी। अतः क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के लिए देश व्यापी अभियान चलाया गया। बड़े–बड़े इनाम घोषित किए गए। परिणामस्वरूप अवध बिहारी और बसंत बिस्वास को गिरफ्तार कर लिया गया और जोधपुर में राजकुमारों को पढ़ाते हुए भाई बालमुकुंद को भी बंदी बना लिया गया। सत्र न्यायालय में मुकदमा चला। 5 अक्तुबर 1914 को फैसला सुना दिया गया, जिसके अनुसार भाई बालमुकुंद, बसंत बिस्वास और अवध बिहारी को मृत्यु दंड की सजा दी गई। भाई बालमुकंद को दिल्ली के केन्द्रीय काराग्रह में फाँसी दी गई। कहा जाता है कि जब उन्हें फाँसी के फंदे पर ले जाया जा रहा था तो उन्होंने स्वयं छीनकर फाँसी का फंदा डाल लिया था कहा था कि आज मैं खुश हूँ कि इसी दिल्ली में मेरे पूर्वज भाई सतीदास मात्र भूमि एवम् धर्म रक्षा के लिए शहीद हुए थे। वही सौभाग्य मुझे आज प्राप्त हो रहा है। विवाह के दो वर्ष पश्चात् मात्र 26 वर्ष की आयु में भारत की आज़ादी के लिए भाई बालमुकंद जी ने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे अनाम बलिदानियों को उनकी पुण्य–तिथि पर स्मरण किया जाए, जिनका योगदान उनसे तनिक भी कम नहीं है, जिन्हें हम दिनोंदिन भूलते जा रहे हैं। देश की मोहयाल सभाओं महान बलिदानी भाई बालमुकन्द की हर वर्ष 8 मई को स्मरण दिवस का आयोजन करना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी इनका स्मरण कर सके।

सत्येंद्र छिब्बर, *जोधपुर*

पत्र

आदरणीय डी.वी. मोहन जी,

मोहयाल मित्र के माध्यम से मैं पंजाब के प्रमुख शहर पटियाला तथा उसके आस–पास बसे मोहयाल भाई–बहनो से अपील करना चाहता हूँ कि कृपया वे मेरे नीचे लिखे फोन नंबर पर कॉल करके पटियाला की मोहयाल सभा बनाने में योगदान दें। मुझे पता है कि यहाँ बहुत अधिक संख्या में मोहयाल परिवार रहते हैं, जो संगठित नहीं हो पा रहे तथा सभा बनाने में इच्छुक हैं।

धन्यवाद

भाई डिंपल छिब्बर/भाई बृजलाल छिब्बर
मो. 07837078808

आधुनिक युग के दधीचि चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता

वैसे तो महर्षि दधीचि का त्याग बलिदान अपने आप में सबसे अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। महर्षि दधीचि की अस्थियों से

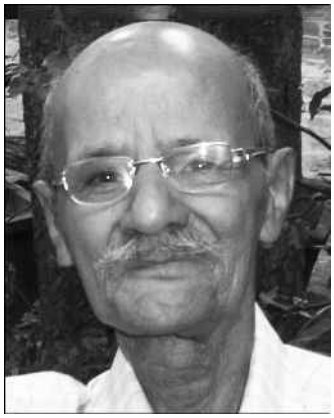

बने वज्र से देवराज इन्द्र ने महापराक्रमी दैत्यराज वृत्रासुर से भीषण युद्ध किया तथा बज्र के प्रभाव से उसका वध किया।

आधुनिक युग के दधीचि चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता ने समाज कल्याण के लिए अपनी पूर्ण देह का दान कर दिया ताकि मेडिकल के छात्र इनकी देह से शोध कर ज्ञान अर्जित कर सके तथा एक स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र बना सकें। समाज के लिए उनका ये अमूल्य योगदान परिवार के लिए ही नहीं मोहयाल समाज के लिए भी गर्व की अनुभूति कराता है। चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता ने 25 फरवरी 2015 को अंतिम सांस ली, लेकिन ये यात्रा अंतिम नहीं थी, कभी न खत्म होने वाली यात्रा की। चौधरी साहब ने अपनी देह 'हिमालयन हॉस्पिटल एंड मेडिकल कॉलेज' (जौली ग्रांट, देहरादून) को दान कर कई लोगों को जीवन दान दिया। चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता जी का देह दान का निर्णय उनके अकेले का नहीं था, उनकी पत्नी श्रीमती उषा दत्ता जी भी उनसे पीछे नहीं है उन्होंने भी अपनी देह दान की हुई है। दोनों का परस्पर प्रेम, एक दूसरे के प्रति सम्मान और निष्ठा हम सभी मोहयालों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता जी मोहयालों का विश्वकोष (Encyclopedia) थे। उन्हें मोहयालों के हर विषय हर क्षेत्र की पूरी जानकारी थी वे पूर्णतया उनके लिए समर्पित थे और उनकी पत्नी श्रीमती उषा दत्ता जी आज भी पूर्णतया समर्पित है। चौधरी साहब देहरादून के मोहयालों और मोहयाल सभा देहरादून के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। उन्होंने मोहयाल सभा देहरादून का संविधान लिखा और लागू करवाया। हम उनके ऋणी हैं।

वे उर्दू और फ़ारसी के ज्ञाता थे। दोनों पर अच्छी पकड़ भी थी। वे अच्छे शायर भी थे और उर्दू शायरी के शौकीन थे। हज़ारों शेर आपको ज़बानी याद थे। चौधरी बिहारी लाल दत्ता और कौशल्या दत्ता के घर कंजरूढ़ में 16 मार्च 1933 में जन्म चौधरी वीरेन्द्र कुमार दत्ता बहुत ही होनहार और मेधावी थे। आपने एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण की और 1950 में जयपुर चले गए यहीं से उच्च पद से सेवानिवृत्त हुए। इसके बाद आप सपत्नीक देहरादून चले आए। आपके दो पुत्र श्री कौशल दत्ता जो फ्रांस में है तथा दूसरे पुत्र सुनील दत्ता अमेरिका में है।

यशवंत दत्ता, *महासचिव, एमएस देहरादून*
मो. 9358321592

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"कहाँ गए वे लोग"

भगवान ने संसार एक विचित्र सी खुबसूरत रचना इतनी गहरी सच्चाई से की है कि उसे समझना मुश्किल है। जिस तरह चिड़िया तिनका–तिनका बीन कर अपना घोंसला बनाती है

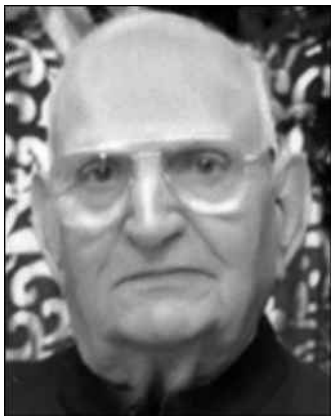

और फिर एक दिन उसे छोड़कर उड़ जाती है। इन्सान भी इसी तरह हर दिन हर पल अपनों को अपने रिश्तों को जोड़ता रहता है, फिर एक दिन सबको छोड़कर चुपचाप चला जाता है। जिनके दुःख की चिंता में सारा जीवन निकाल देता है, अचानक उन्हीं से मुँह मोड़कर कहाँ जाता है कोई समझ पाया नहीं। काश! मैं कभी भगवान से पूछूँ कि वे हमारे अपने सब कहाँ गए? कहाँ ढूँढे उन्हें तो यहीं जवाब मिलता है कि रोओ मत वे सब तुम्हारे पास हैं, महसूस करो सिर्फ!

काश विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली होती कि अपनों को फिर से मिल सकते, परन्तु नहीं यह केवल कल्पना मात्र है। भगवान ने यह सवाल व उसका उत्तर अपने पास रखा है। कभी–कभी अकेले मन घबरा जाता है। सोचती है चल मन उनके पास, अपने माँ–बाप के पास, इतना बैचेन होता है कि किसी भी काम तक में मन नहीं लगता। भगवान हाथ पकड़ कर हिम्मत देता है। मैं मानती हूँ कि भगवान यानि हमारे अपने जो कि भगवान के पास चले जाते हैं। वे ही हाथ पकड़ कर उठाते हैं और हौसला देते हैं। अपने बड़ों से सुनते थे कि एक लड़के जिसने अपनी माँ का दिल हाथ में पकड़ा था जब जोर से ठोकर लगी तो आवाज आई चोट तो नहीं लगी, इसलिए अपने भगवान के रूप में दूर से हमें देखते थे कि हम क्या कर रहे है और फिर आकर सांत्वना देते हैं।

मैं आज अपनी दादी, माँ, पापाजी, महेश सब को याद कर रही हूँ। साथ ही अपनी सासु माँ और डैडी जी को भी। मैं अपनी हर रोज की प्रार्थना में सबको नमस्कार कर अपने बड़ों को नमस्कार करना नहीं भूलती। यदि माता–पिता ने जन्म दिया है संस्कार दिए हैं तो सास–ससुर आज यह परिवार, आशीर्वाद और पति के रूप में सामाजिक मान दिया है। मैं अपने को भगवान के आशीर्वाद से और अपने सब बड़ों के आशीर्वाद से धन्य मानती हूँ। भगवान का शुक्र है कि माँ–बाप ने पालकर आज इतना सुन्दर रखा और वे संस्कार जो आज हमारी दौलत हैं अपने बच्चों को दे रहे हैं। मैंने यही अपनी दादी और माँ से सीखा है कि व्यक्ति को दौलत से नहीं उसके संस्कारों से जाना जाता है। इसीलिए कहते हैं कि इस पृथ्वी पर भगवान का रूप है तो माँ–बाप हैं। हमारी पहचान उन्हीं से है।

फिर हम कैसे अपने को समझाऐं कि हमारी मूल्यवान वस्तु खो गई है। ढूँढ़ते–ढूँढते यही जवाब मिलता है कि परेशान मत हो भगवान कहते हैं वे मेरे पास हैं तो फिर रोना खत्म कर खड़े हो जाते हैं। भगवान का व अपनों का धन्यवाद करते हैं। अपने बहन भाईयों को मिल–जुल कर और ज्यादा समय एक दूसरे के साथ गुजारना चाहते हैं। सिर्फ और सिर्फ इस डर से कि न जाने कौन कब चल पड़े। अपनी भावनाओं की दो पक्तियाँ लिखती हूँ शायद उन तक पहुँच जाए।

हम दीन बड़े हैं दूर बड़े,
क्या भेंट करे उपहार तुम्हें,
विश्वास इसी में कर लेना,
सौ बार हमारा प्यार तुम्हें।

प्रभा मेहता, *गुड़गाँव (मो.) 9810797567*

ट्रस्ट की स्थापना

श्री रघुवंशी लाल वैद व श्रीमती शकुंतला वैद निवासी 5जे/35, एन.आई.टी. फरीदाबाद ने अपने पिताजी स्वर्गीय श्री ठाकुर दास जी, माता जी स्वर्गीय कुलवंती देवी जी, ताया जी स्वर्गीय श्री शिवलाल जी (संत), व अपनी बुआ जी स्वर्गीय श्रीमती पार्वती देवी जी (बाजी) के नाम का ट्रस्ट खुलवाया है जो विधवा फंड के लिए दिया गया है।

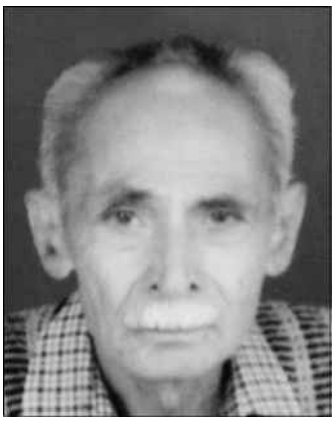

श्री रघुवंशी लाल वैद जी, श्री अशोक लौ जी के मामाजी हैं उनकी प्रेरणा से ही उन्होंने 5000 रुपए का एक ट्रस्ट खुलवाने के लिए जी.एम.एस को राशि भेंट की।

-रमेश दत्ता, *प्रधान एम.एस. फरीदाबाद*

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अनोखा संकल्प

एक छोटा सा गाँ था इसकी खुबसूरती को चार चाँद लगाती ऊँची–नीचीं पहाड़ियाँ, इन्हीं पहाड़ियों से कल–कल करती निकलती बरसाती नदियाँ जिनके किनारे बड़े व्यवस्थित ढंग से बसा ये गाँव बड़ा न्यारा था। सुन्दर मन्दिर–मस्जिद एक ही स्थान पर और इतनी संख्या में कि जो भी इस गाँव में आता आश्चर्यचकित रह जाता। इस गाँव के चारों ओर तीर्थ स्थल होने के कारण सभी दिशाओं से आने वाले तीर्थ यात्रियों को इस गाँव में से होकर निकलना पड़ता था। सब अपना पड़ाव इसी गाँव में डालते थे।

गाँव में धर्मपारायण सेठ रहते थे। उनकी संतान न थी। एक बार गाँव में संत आए। उन्होंने सेठ की भक्ति–भावना से प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया।

बेटा ''आप की निष्काम सेवा से आपके मन की इच्छा पूर्ण होगी''। सुनो....

कामना पूर्ण होने से पहले इस गाँव में आप मंदिर बनवाना।

''जी, महाराज। ऐसा ही होगा''।

कुछ दिन पश्चात वहाँ एक फक्कड़ फकीर आ गए।

सेठ ने इनकी सेवा भी तन–मन से की फकीर बाबा बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंने सेठ जी को कहा–

''अल्ला मियाँ तुम्हारी इल्तजा मंजूर करेंगे। तुम्हारी झोली खुशियों से आबाद करेंगे।

बेटा, तुझे एक काम करना है।''

''जी, कहिए? वैसा ही करूँगा जैसा आप चाहेंगे।''

''बेटा, एक मस्जिद बनवा दो। मस्जिद में हर आने वाले की दुआ तुम्हारा जीवन बदल देगी।''

सेठ जी ने मंदिर बनवाना शुरू किया। मंदिर बनकर पूरा हो गया। सेठ जी के मस्जिद बनवाना नहीं चाह रह थे।

अपने मन की कामना पूरी न होते देख सेठानी जी, सेठ जी से मिन्नतें करने लगी।

आप मस्जिद भी जल्दी ही बनवाए। सेठ जी ने मस्जिद का निर्माण कार्य शुरू करवा दिया। मन्दिर के साथ ही मस्जिद बनकर तैयार हो गई। जैसे–जैसे मन्दिर–मस्जिद तैयार हुए तभी सेठ जी के यहाँ सुन्दर पुत्र पैदा हुआ।

सेठ जी ने बन्धु–बान्धवों सहित बड़ा भारी यज्ञ किया और बाद में भण्डारा किया। सेठ जी ने यज्ञ में एकत्रित सभी गाँव वालों को बताया कि मेरे यहाँ पुत्र की प्राप्ति ये भव्य मन्दिर–मस्जिद है। जैसे मुझे इन मन्दिर–मस्जिद को बनवाने पर खुशियाँ प्राप्त हुई हैं। उसी प्रकार अगर आप भी घर में खुशियाँ चाहते हैं तो इसी प्रकार साथ–साथ मन्दिर–मस्जिद बनवाएँ।

तभी गाँव वालों ने संकल्प लिया। अपने गाँव की खुशहालों व समृद्धि के लिए मन्दिर–मस्जिद इकट्ठे बनवाएगें।

जिन से हम सीख सकते है इन्सानियत, नैतिकता और सच्ची धार्मिकता।

इतना ही नहीं एकता के प्रतीक ये मन्दिर–मस्जिद साथ–साथ रहकर मानवीय अंधविश्वासों, खोखले रिवाजों और सामाजिक बंधनों से मुक्त हैं।

श्रीमती चन्द्रबाला भिमवाल, *गुड़गाँव*
मो. 09810216777, 09425430138

शहीदों के नाम

बिक जाती है नारी यहाँ पर, बिक जाते हैं नेता,
विरला कोई ईमानदार को, सम्मान यहाँ पर देता,
खादी टोपी पहन के घूमें, कई लूटने वाले,
बाढ़ खेत को खा रही कब से, साथ मिले रखवाले।

राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह भूल भूलैयां हो गए,
आजादी के बीज जो अपने, सीस चढ़ा कर बौ गए,
खुली हवा में सोने की, हम को हर रात मिली है,
आज उन्हीं की कुर्बानी से, यह सौगात मिली है,
फसल पकी तो काट के ले गए, देश लूटने वाले,
कैसे गिन पाओगे अब तक, कितने हुए घोटाले,
भाई–भतीजावाद तक सिमित, आज सियासत हो गई,
मुँह पर काला कपड़ा डाले, आज शराफत सौ गई।

संजीव दत्त शर्मा, *गोहाना (हरियाणा) (मो.) 09812118104*

कविता

जे सुख चांवहें आपणा, ते पाणी मंग ना पी,
ना वेख पराईयां चोपडियां, ते ना ललचा तू जी,
रब ने बक्शी जिन्दगी, ते बंदियां वांगू जी,
नाल ना जाणं गे पुत्तर तेरे, ना जावे कोई धी,
नाल ना जाणीं पत्नी तेरी, सत फेरे लै के आई,
नाल जावेगी कर्म तेरियां दी, सुच्ची सच कमाई,
नाल ना जांण गे सगीं साथी, नाल तेरे सी खेले,
बिछड़ जाणं गे ऐवें जेवें, मुक जादें ने मैले,
जिन्ना जीणां है जग विच तू, नाम सहारे जी लै,
ओह रब अमृत दा प्याला है, जिन्ना यावें पी लै,
भरया मैला छड के इक दिन, सबने है तुर जाणां,
पता नहीं कद मिलेगा, किधे थां ठिकाणां,
आयेगी नहीं आयेगी, अगले जन्म दी वारी,
हाले वी नहीं चेतत्या, उमर बीत गई सारी।

–संजीव दत्त शर्मा, *गोहाना (हरियाणा), मो. 9812118104*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हमारे पूर्वज

सरदार वजीर सिंह दत्ता (स. कड़क सिंह दत्ता) जागीरदार जी का जन्म जफ़रवाल दत्ता जिला सियालकोट में हुआ था। यह श्री लछी राम दत्ता के पौत्रो व श्री पिड़मल जी के सुपुत्र थे। यह महाराजा रणजीत सिंह की सेना में कुमेदान के पद पर काम करते थे। जब जमरौद के किले में जरनैल हरी सिंह नलवा जी की मृत्यु पठानों से लड़ते लड़ते हो गई तब सेना की कमान स. वजीर सिंह दत्ता जी ने संभाली और उन्होंने कड़कती ध्वनी से पठानों पर आक्रमण कर दिया और जमरौद के किले की लड़ाई जीत ली। उस समय महाराजा रणजीत सिंह ने इनकी बहादुरी और कड़कती आवाज से प्रसन्न होकर इनका नाम वजीर सिंह से कड़क सिंह रख दिया और इन्हें अमृतसर के निकट 250 बीगा की जागीर अपनी शिकारगाह से इन्हें प्रदान कर दी। जागीर देते समय महाराजा रणजीत सिंह ने इनसे कहा कि यदि आप जंडियाल गुरू में ज़मीन लेगें तो आपको 800 बीगा मिलेगी तथा यदि आप अमृतसर में लेना चाहो तो आपको 250 बीगा जमीन मिलेगी। तब स. कड़क सिंह जी ने महाराजा रणजीत सिंह जी से कहा कि वह 250 बीगा जमीन गुरू राम दास जी के चरणों में ही लेना पसन्द करेंगें तथा इन्होंने 800 बीगा जमीन छोड़कर गुरू राम दास जी के चरणों में 250 बीगा जमीन लेनी स्वीकार की। स. कड़क सिंह जी तीन भाई थे, जिनमें से एक की शादी नहीं हुई थी और बाकी इनके दो भाईयों में से एक की सन्तान स. काहन सिंह दत्ता जो एनीमल विभाग में डाक्टर थे तथा बाद में यह परिवार पानीपत में सैटल हुआ। दूसरे भाई की सन्तान चौधरी काका राम हमे राज जी दत्ता इत्यादि थे। स. कड़क सिंह जी के दो सुपुत्र थे एक स. लाल सिंह तथा दूसरे स. सवंद सिंह। स. सवंद सिंह जी का एक ही बेटा स. मिंया सिंह तथा स. मिंया सिंह जी के चार सुपुत्र थे, जिनके नाम स. गुरदियाल सिंह, स. इकबाल सिंह, स. उत्तम सिंह तथा स. मक्खन सिंह। स. इकबाल सिंह वन विभाग में सेवा किया करते थे। उनका जीवन बहुत सादा था और उन्होंने अपने जीवन काल में कभी भी प्याज तक का सेवन नहीं किया था तथा अंग्रेजों के साथ काम करते हुए भी वो हमेशा ही कमीज और पजामा ही पहनते थे और उन्होंने जीवन काल में कभी भी साबुन का प्रयोग नहीं किया। वह वन विभाग में रहते हुए भी इतने ईमानदार थे कि एक अंग्रेज चीफ़ कंजरवेटर ने उनकी गुप्त फाईल में यहाँ तक लिख दिया कि ऐसा ईमानदार इंसान न कभी वन विभाग में था, न है और ही कभी आगे होगा। वह वन विभाग में वन विभाग के बजट तथा प्लैनिंग का काम किया करते थे तथा कैबिनेट की मीटिंग में विभाग का बजट पेश किया करते थे। यह उन दिनों की बात है जब वन विभाग के चीफ़ कंजरवेटिव श्री नेत्र प्रकाश जी मोहन थे तथा उन दिनों वह छः महीने के अवकाश पर चले गए तथा उनकी जगह स. प्रताप सिंह ने चार्ज संभाला। उन दिनों स. प्रताप सिंह कैरो प्लैनिंग मंत्री थे जब बजट पेश करने का समय आया तब प्रताप सिंह कंजरवेटिव ने कहा कि इस वर्ष बजट मैं ही बनाऊँगा तथा मैं ही पेश करूंगा किन्तु स. इकबाल सिंह दत्ता जी ने अपने विभाग का अलग बजट बनाया जिस समय कैबिनेट की मीटिंग में प्रताप सिंह, चीफ़ कंजरवेटिव ने अपना बनाया हुआ बजट पेश किया उस समय वित्त सैक्रेटरी ने प्रताप सिंह को बीच में ही रोक दिया तथा उन्होंने श्री इकबाल सिंह दत्ता से विनती की कि वे अपना बजट पेश करे और उन्होंने अपना बनाया हुआ बजट कैबिनेट में रखा। इस घटना के उपरान्त श्री इकबाल सिंह दत्ता जी की तथा श्री प्रताप सिंह चीफ कंजरवेटर वन विभाग के बीच में कैबिनेट की मीटिंग में तू तू मैं मैं हो गई तथा श्री इकबाल दत्ता ने तत्काल ही अपना इस्तीफा दे दिया तथा अवकाश प्राप्त करने की अवधि से दो साल पहले ही अवकाश प्राप्त कर लिया।

सरदार कड़ाक सिंह दत्ता वल्द पेडमल जफरवाल दत्ता तहसील–सादरा, जिला–शेखपुरा के रहने वाले वह महाराजा रणजीत सिंह की फौज में कमांडर थे और महाराजा रणजीत सिंह ने जनरल हरी सिंह नलवा की देखरेख में अफगानिस्तान में काबुल का किला, जमरौद को जीतने के लिए फौज भेजी थी और जब वहां पर हरी सिंह नलवा लड़ाई में शहीद हो गए तो उसके बाद महाराजा रणजीत सिंह ने और फौज लेकर फिर किला पर हमला किया कमाण्डर सरदार कड़ाक सिंह ने सबसे पहले किले के अन्दर प्रवेश किया फिर उनके पीछे फौज भी आई उस समय उनको दो गोली लगी जो किला जीतने के बाद लाहौर जा कर गोलियां निकलवाई, महाराजा ने खुश होकर इनका नाम पहले वजीरचन्द था, इनका नाम बदलकर कड़ाक सिंह रख दिया क्योंकि इनकी आवाज बहुत तेज थी और महाराजा ने खुश होकर अमृतसर के हद के अन्दर रख शिकारगा में साढ़े सत्तासी एकड़ जमीन इनाम में दी जो गन्डासिंह वाला के नजदीक बार्डर बाईपास पर है वहाँ पर आज–कल काली माता का मन्दिर बहुत मशहूर हो चुका है सरदार कड़ाक सिंह दलीप सिंह के दादा के दादा (लगडदादा) थे जो कि मुयालस जमुनापार दिल्ली के प्रेसीडेंट है।

इस जमीन को बाद में अंग्रजों के आने के बाद लाडलारेन्स ने भी इन्हीं को इनाम के तौर पर लिख दी।

दलीप सिंह दत्ता

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor